सति सुलोचना

कुड़मालि गीति काव्य
(रामायण पाला लंका काण्ड आधारित)

गंधर्व महतो



BVP- 1989

19/3/18

1/13

सति सुलोचना

कुड़मालि गीति काव्य

(रामायण पाला लंका काण्ड आधारित भादरिआ छन्द)

कवि

गंधर्व महतो

संपादक

डॉ. वृन्दावन महतो

PYARA FOUNDATION

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन

राँची (झारखण्ड)

कवि

गंधर्व महतो

डेलड. (लखीपुर), मूल बासिंदाः सुटीलौंग, बुंडू (राँची)

© **संपादक**

डॉ. वृंदावन महतो

प्रथम संस्करण : आखाइन जातरा, जनवरी 2011

सहयोग राशि : 40/- रुपये मात्र

प्रकाशक

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन

चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड

दूरभाष : 9234301671 ई-मेल : pkfranchi@gmail.com

वेब पता : www.kharia.in

शब्द-संयोजन : संतोष कुमार

मुद्रक : आई. डी. पब्लिशिंग, राँची

आवरण/रूपांकन

आधार अल्टरनेटिव मीडिया (आम) 9234301671

Sati Sulochana

Kurmali poem by Gandharva Mahto

ISBN : 978-93-81056-24-0

समर्पण

कुड़मालि भाषा-साहित्य के
सभी ज्ञात-अज्ञात रचनाकारों को
सादर समर्पित!

दुइ सबद

सति सुलोचना रामायण पालाक लंका कांड ले आधार लेल आहेइक। सति सुलोचना, पूरा कविता टा गीति काव्ये आहेइक। गितकार, झुमरिआरे देखलेइ जाने पारता आर भादरिया सुर बा झुमेइर सुरे गाए पारता।

शब्द माहान हेर फेर हेलउ कुरमाली शब्द कर बेसी भागे प्रयोग आहात। कवि स्व. गंधर्व महतोए बेजाञ कसटअ करि तुकात्मक आर लयात्मक भामे लिखि मके 1982 साले देल रहे। मिनतुक अपरिहार्य कारने इ कविटाक प्रकाशन नि हे पारलेइक। कवि कर देहावसान लगभग 98 बछरे हे गेलेइक। आइज दुइअ अजा नातिञ मिलि इ गिति काव्य तहर हाथे राखलिह। मने हेइक तहर आशिस आर दिशा निर्देश पाउआतेइक।

धन्यवाद।

डॉ. वृंदावन महता



गंधर्व महतो

जन्म : 1887 मृत्यु : 1985

सती सुलोचना

बंदऊ परभू हर गऊरिआ।
लखि सरसंति हरिआ।
नमः नमः गजाननिआ
अमअरअ कारतिक बँदिआ ।।1।।

सभे अमअरअ बंदिआ।
चाँदअ सुरुज नदिआ।।
आरअ बंदि सभे तारा गनिआ
अमअरअ कारतिक बँदिआ ।।2।।

गंगा जबुना सरसतिआ।
बरहम सिंधु काबेरिआ।।
नरमदा, गदाबरि काँचिआ।
दामोदर संख खरकाइआ।।3।।

अमअरअ कारतिक बँदिआ।
संखा, राढु, कांसाई कोयलिआ।।
सरजू सबरनारवा आरो नद नदिया।
दया करा सभेगिला मिलिआ
मुरुख गन्धर्व किछु नांहि जानिआ ।।4।।

लखनअ बड़े बिर।
परभू परताप मनेकर,
आए कहन बांचाए सौ हर,
मेघनाथ के मारअबअधर ।।

मेघनाथअ मारबंअ
रघुबर दहाए देबँ
लड़ाई करे जदि,
आवतअ हर।।

रघुबरेक कसम देउएक।
सिखो फारक कहि देऊएक।।
मारबेञ मए मेघनाथ कर।।
एकसअ जइगजदि कर।

नि कुमभिला जइग परे।।
देबिक बरे हेतउ अमर।
बाधा हेले मरन अकर।

बाजअना बाजे घर।
चले घोरि निसाचर।।
रघुबरेक हुकुम दिया।
गेला लखनिआ।।

मेघनाथअ संगे लड़ाई करिआ।
संगे गेला हनुमानिआ।।
नल-निलअ अंगादिआ।
बांदर सभ देखिआ।।

निकुंभिला जइग कुनडे आहुति करिआ।
जइग नासअ करिआ।।
मेघनाथअ नाहि उठिआ
बांदरे चुइले धरि लाथिआ
लखने बाने मारिआ

गाते हिं बानअ गेला भेदिआ
मेघनाथेक भुजा देला काटिआ।
मेघनाथ गेला मरिआ

लड़ाई जिति लखनअ गेल।
मेघनाथअ मुंड़अ लेल।।
राखि देला आघुञ रघुबर।
देखि खुसि भालू बांदर।।

मुड़अ राखा जतन करि।
सुरअ मुनि खुसि हरि।।
लखनेक बाने गात बाहि गेलेक घार।।
गिरअलेइक आनगाँए बड़े पाहाड़ निआर।

सुलअचना भुजा देखि
काँदाअतअ मने दुखि
मने निहि हेलेइक पतिआर
जेञ बारहबछर नि खाताक

निंद नारि सभे तिरसकार
ताकर की आर दसा एहे परकार

गनो खुसि देखिकरि
पुछअतअ रघुबरि
ए-ह सत्रु मरल
सुनि खुसि हेला रघुबरि

लखनअ गड़लागि रघुबर
खुसि माहान भेंटअ कर
ए-ह सुग्रीबे हुकुम रघुबर
हर कहे गौरि पर

बैरि मरल एहे परकार
ए-ह सुरअ नरअ सुनि खुसि अमर
लखन बाने भुजा गेला
लहूलुहान गात हेला
ए-ह माझे आँगनाए जाये गिरला

लहूलुहान भुजा देखि
अचअरजअ लड़ाई देखि
अमर माराए गेला देखि
सुलअचना भारि दुखि ॥1॥

राम–राबन लड़ाई भारि
मर पुरुस तांहा जारि
नर अमरअ लड़े नाहि पारि
सुलअचना दुखअ भारि ॥2॥

सुलअचना आगना गेलि
भुजा देखि कांदे हेलि
मनि जड़ल कंकन भरि
देलेइन फुटाए ठंसी करि ॥3॥

सुलअचना मने करिआ
काटल हाथे खड़ि दिआ।
लखन सभे गुनअ लिखिआ।
परभू परताप मने जानिआ।
लखने ले गेला मुड़िआ।।

तर बिसास लागिआ।
भुजा देला भेजिआ।
मेघअनाथअ गुनअ बाखानिआ।
सुलअचना काँदिआ।
अमरअ डर काँपिआ।

पुलअसत कुलअ नासिआ,
अमरअ भेला खुसिआ
सुलअचना पालकि चढ़िआ
परभू गुनअ गाहिया
परभू परताप मने जानिआ

बाजना बाजे घर
घेरि चले निसाचर
दुआरि देला खबर
मेघअनाथेक भुजा आगे धर

ससूर पति निशाचर
दया करे मर उपर
मुँड टा मागाए दे न मर

सत्रु मारेक छड़ा आसा।
नेखेइक एखान कनअ भरसा।
अमर लग मरि गेला देखा
एखन हलउ रिचिक सिखा।

गुनअ गानअ रघुबिर
सुलअ चना सुनि थिर
पुरुस मुंड़ पाउले मर
सति हेम जरि कर

रन थले गातअ रहल
मर घार भुजा आअल
मुंड़अ गेला पास रघुबर
पाऊले मुंड सति हेम जरि कर

तएँ ससुर निसाचर
मुंड देउएक कसटअ कर
काथा हेलेइक बजर बराबर
पाउले मुंड सति हेमजरि कर

राबनअ धिरजअ करे
बुझाए सुलअचना परे
मर समान बिर नेखत
इ संसारे दुइअ भाइएक मुड़ आनि देबँ
तर गड़ तरे ॥

तर आसा बहुत भारि
तर भाई सहित पुरुसअ मारि
नर बानरअ लड़ाइए मारि
आनि देबअ मुंड तरि

बिलम करे घड़ि चारि
दुखअ छाड़े पुतउ मरि
सुलअचना कहे खिसआइ करि
झन परताप सुनाए मरि

सागर डेगी लंका जरि
सेटाऊ हेला छट तरि
जबाव देले पापे मरि
झागड़ा लागले सभे हारि

राइज घुरले किना काम करि
विधिक लिखन कि आर टारि

सुलअचना उठिकर मनदअदरि
पासे चल
काँदत गडे धरि कर
दुखेक काथा सुने सासअ मर

आघुक काथा बाखान कर
सुने मनदअ दरि काँदे तर
हाथे लिखल सुनाए अकर
मनदअ दरि कहतअ

सुलअचना सुनि जातअ
नारद बात सभे हेला सतर
सभे राक्षस दुखअ पाए
सभे काथा मने हेला मर

सत्रु भाभे राबन लड़िआ
काकरअ काथा नि मानिआ
मरेकर निहिं डरिआ
राछस जाइतक उधार लागिआ

सिता कर दुखअ छुटिआ
बांदर भालू घरअ लुटिआ
मनि गहना सभे छिनिआ
बांदर भालू सुखअ करिआ

अमरअ बिभिसने राइजअ दिआ
संसारे दुखअ सुखअ भगिआ
राम गुनअ गाहिआ

मनदअदरि कहत बात
बेटि दुखअ छँड़े जात
पुरुस संगे सति हे जार
पासे चलि जाए रघुबर

पति मुंड मांगे तर
लाजअ बिजअ सभे छड़
लाज करेक समय नेखऊ तर
बिभिसन ससुरअ तर

अंगद हेके बेटा मर
एक नारि बरता रघुबर
लखनअ गुनअ सुनि तर
स्त्रि मुंह नाहि हर

ब्रह्मचारि हेके माहाबिर
दया करबअथु तर उपर।

मनदअदरि उपदेसि सुनि
चलि गेलि सुलअचनि
मनदअदरि परनाम करि
पासे गेलि रघुबरि

बांदर भालू सेना देखि
सागर पासे परबत देखि
लखन कराँए सुते रघुबरि
सुलअचना देखि डरि

परभू बिनय स.नाए मरि
डांड़ालि देखि सेना बुझे भारि
मेघअनाथअ मरल परि
राबनअ हठअ देला छाडि

बिना सरमे सिता पाइआ
बिधाता मदेद दिआ
रामअ सुगरिबअ लड़ाइ जितिआ
बिरअ बांदरअ जसअ मिलिआ

रामअ लखनअ दुखअ छुटिआ
बिना केलेसे लड़ाइ जितिआ
जुगे बांदरअ जसअ मिलिआ
काहाँ राछसअ काहाँ बाँदरिआ

बांदरे एसन बिचार करिआ
रघुबरेक कामे गेला छुटिआ
सुलअचना सेना माझिआ
बेजाञ लाजे मरिआ

लखनअ रघुबरअ देखिआ
देखा बेदे पढ़िआ

सुलोचना कातरे डाके बारे बार
ए! हरि दुखिनि के दया करे तर जे।

सत्रु बहरिया, बिनति, नि जानिया
ए! हरि पुरुस मरल दुख भरल गात जे।

तँए परभू सुख दाता
माँगो मँए पुरुस माथा
ए! हरि मुंड़ पाले सतिहेम मँए जे।

सुलोचना काथा सुनि
आँइखे बहे पानि
ए! हरि हेला परभू कातर जिबन जे।

सुलोचना कहत बात
सुने परभु रघुनाथ
मुक्ति पदेक समय मरि
मए त लाजे मरि
तर संगे मिलाबो हरि।

सागरे मिलल पानि
फिर नि आउअल घुरि
आसिस मांगो चरन धरि।
पुरुस मरल दुखे मरि
मुंहे कर धुरा झाड़ि

सुग्रीबे कहे रघुबरि
काटल हाथे लिखे केसन
काटल मुड़े हाँसे केसन
सुलोचना कहे ए हरि
ना न ले परिक्षा एखन तरि।

छबिक समान गुनेक सागर
रघुबरअ गुनेक घर, अहरे
अमअर नि हेला पार जे

कबि सभे किना बारानि आर।
कापाड़ सुंदर भाँवा सुंदर
मुड़े कर जटा सुंदर
अहरे मुनि सभेक मन महल जे

बिरअ आस दया सागर।
भाभअसागर करअ पार
पातेक फुलेक माला आर अहरे
चरन कमल सभा बाढ़े तरजे

हर हर ब्रह्मा नमस्कार
मुनि दुखअ हरनो हार।
अहरे, दुखी मागे चरनो तर जे

हनु अंगद हाथअ जरी
कुमद मयद बलअधारी
सुगरिब सुसेन जमबु बलअ भारी
बिभि, लखन हाथअ जड़ि

सेना माझे रघुवरी
सुलोचना दरोसनो करि
नजरो सफलो हेला भारी
गड़ो लागे भुइंए भिरि

बिभिसने कहे संभा चारि
मेघनाथअ पतिबरता नारि
माहाराजा रघुवरअ समअझारी
दुखिनी माँगे आसा करि।

सुलोचना बिनति बारेबार
सुने प्रभु रघुबर दया करे
सुलोचना पर।

सरने आउलं तर
दया करे अबला पर
दया माया नामो हेकउ तर

काथा सुनि सुलोचनी
कहत रघुमनी पुरुसो
बांचाए देबं तर।

तँय परभु उदारो
दया सागरो, बांचेक छाड़ि
मरन बेस मर
दया करे मर उपर।

शिव सेस अमरो, प्रनाम कर तर
सुलोचना चरन धर

दया करे मर उपर।
दीनबंधु दया सागर

सभे गुने उजागर, मुरूख अबला
बिनति मर।

रांगा चरनअ, डर हरनी हारअ
संसार भरन पसन तर।

सिरे जटाधारी खुसी करनअ हारि
बिनय सुने मर मुरुख परि।

सुलोचना बिनति कर
खुसी गद-गद भर
चरन धरलाक जाए रघुबर
दुख धुर करे न मर

सुलअचना परभु जानीकर
बहुत बिनय कर
दुख जातक दया सागर
दीन बंधु दया सागर

दया निधि चतुर मैत्रि
मुरूख बुधि मर
दुखः धुर करे न मर।
सेसो शिव सरसति

भय बेसि भाग्यवति
चरन धुरि दे न मुड
दुखः धुर करे न मर।

सुलोचना कातरे डाके बारे बार
ए हरि! इ समए केउ नेखत मर।

राँगा चरन तरन तारन
दुस्ट दलो मारन, ए हरि।
भक्तो दुख हरन हार जे।

सभा के सिरे ताज गरिबो
नेउआज आज ए हरि सुर्पनखा
बे रूप करल जे।

दसोरथो कुमारो अमरो वन्दनो हारा
मरि ए-ह ब्राह्मन साधु
सुखो देने हार
भवो सागर तरनो तार

मए जसो सुनि सुंदर
आंउल सरन तर।
ए-ह मदेत करें प्रभु मर।
मेघनाथेक बहु मए

बिनय अधिकार नेखेइक मर
ए-ह पुरुस मरल
दुखो के सागर
बेजाञ सहोलो

आरो नाहि पारो ए-ह
सुलो मागे चरन तर जे।

सेना कर सभा माझे
मन इछा मागो तके
अहरे पुरुस मुड़ देले
संगे सति हम जरि जे

मर पुरुस रने मरलाक
मुकति पद पाउलाक
अ हरे दुखि करेले किना नाफा तर जे

लखी, ब्रह्मा सेवा तर
गड़ो लागो हाथो जोरअ हरे
काथा सुनि प्रभुक आंइखे लर जे

अंतरजामी रघुवर आदि अंत
नाही तर
सुनि खुसि भेला मर

पुरुसो बांचाए देबँ तर
सअ कल्प लंका तर
दुखी छाड़ि खुसो हर

चांड़े चलि जाए घार तर
सत्य प्रतिज्ञा मर, बांदरो सुनि डरे
नाहि कहे पारे रघुबर

लंका राइजे विभिसने
मेघनाथो धनुक बाने
पासे कि डांड़ात केउ तर
सभे देखा बेदो पर।

सुलोचना मुड़ो के कहिआ
हाँसे मर पतिआ
हाथेक लिखलो हानि पतिआ
चांड़े हाथे मर पतिआ

देरि हेल दखिआ
सारा खने कहिआ
लड़ाइए गेला थकिआ
लखनेक बाने लागिआ।

मके काहे लाजे करिआ,
जदि हेक सतिआ
काटल मुंड हांसिआ

नाम हेतउ अमरिआ
सभे डांडाल हाथअ जड़िआ।

जदि मए जानेइ तेलं
मर बाप के डाकेइतेलं
भगवानो जिते नाहि पारि

धाधाए गेला बनोचारि
सुलोक काथा सुनि
मुंड हांसल सेइ खनि

सुग्रीबो पुछे सेइ खनि
बज्रा समान मुंड़ो हांसल
सुने निहि पारल

सुग्रीबो लाजे हेला भारि
देखा बचन बेदेरि

रघुबर कहत बात
सुनअ मिंता कपिनाथ

कारनो मुड हांसल
सुलोचना सतित राखल

जे इसतिरि पति सेवा कर
सभे देवता खुशी भर

सुलोचना सति पति कर
सतित बांचाए खातिर मुंड़ हांसल

सेइ खातिर प्रभु बड़ाइ देकर
सुलो मागे चरन तर

बांदरो डरावनी
गरिबो पोसन हारि
भाला रि हरि सुलोचना बिनय भारी

तएं परभु उदारो
दया सागरो
भाला रि हरि सुलोचना बिनय भारी

रन थले मारालाक
लखने मुंड़ आनलाक
तर राखि देलउ आघु तरि
भाला रि हरि सुलोचना बिनय भारी

अमरो बन्दी छुटि गेल
आपन आपन घार गेल
अ हरे पुलस्त बंस हेलेइक नाश
चांद सुरुजे छाड़लअ प्रकाश।

अग्नि देवता खुसी हेल
गंगा जमुना साफ पानी हेल
अ हरे इंद्रक राइज निडर हेलेइक पास।
जमो कुबेर दिकोपाल

नरो नागो मुनी आर
अ हरे दुखी छांड़ि सुखो
हेलेइक पास
राबन दुआरे भिड़ो हेल

बैरि सेना जानि गेल
धनुक धरि कुदे पास
तर प्रभु मांगो चरन आस।

सुलोचना गड़े धर, बहुत बिनय कर
ए हरि मर खातिर ना लड़े आइज जे।
बिभिसन के गड़े धर
रघुबरो मने कर

ए हरि बिभिसनो बापो हेकिस मरज
इ कुलक लाज तर हाथेक भितर
ए हरि पुलस्त बंसेक दिया तँए ज
बिना झागड़ा राइज करें

जइगो कृति संगे धरें
ए हरि रघुबरेक सगे
हेतउ नाम जे।

बिभिसने सुनिआ, दया मने करिआ
समय नाहि पाइआ
सुलो के बुझाए बतिआ।

कर्म गति जानिआ
बिभिसने हुकुम पाइआ
सेना दलो बाहर करिआ

बिभिसनो घुरिआ, लड़ाइ भुलिआ
मने बेजाञ खुसिआ
पालकि मुड़ो धरिआ

चलली रथे चढ़िआ
प्रभु कर नाम जपिआ
राम गुनो गाहिआ

घनोश्यामो रूपो मने करि
सुलोचना गेली चलि
ए हरि चलि गेला सागरो संगम जे
मन्दोकी संगी सउब

दुखोः भरि गेला सउब
ए हरि रावनेक हुकुमे चले सभे
राइकस जे
अगर चंदन भारे भार

चीता बनाय सुंदर सार
ए हरि सर्ग लकेक सीढ़ी बनाता जे
सुलोचना गड़ लागि
सभे के खुसी करि

ए हरि हाथे मुंड धरि
चिताए चढ़ल उपर जे।

नीदो नारि भजनो, बारह बछर छोड़नो
रघुबर लखन गुनो सभे हेतेइक छट जे।

अखंड अखय अबिनासी मरअ
जनम मरन पसन तर जे।

अमरो भगतो हितो, देहि धारन
लीला हितो

मुनि मनो रहेक ठांञ जे।
जेकर गुनेक महिमा, वेदे नाहि बरनिमा

मुरुख गंधर्ब किना जानए तर जे।

हे सुदेव रघुवर
मनो इच्छा जानिस मर
भभोसागर करे पार, प्रभु रघुवर
दया करे सुलोचना पर

बातो सुनि रघुवर
सुग्रीबो डाके तर
मेघनाथेक मांगाय देला सर
सुलोचना मुड़ो पाएकर

पुरुस दुखो बाढ़े जर हे प्रानो नाथ मर
सुलोचना दुखे भर
आंचरे मुड़ो पंछि कर
जतने हाथे धरि कर
चलि गेली दहाए कर।

सुंदर चिता बनाय करि
सर्गलक सीढ़ी धरि
सुलोचना सभे के प्रणाम करि

खुशी हेला सभा जनो भारि
सुलोचना साहासो धरि
रघुबरो दहाए करि

मेघनाथेक मुड़ो करा करि
बसोली आसनो मारि
आइग देइत के आसमाने उठलि

सुलोचना के केउ नि देखलि
सुरो पुरो पहुंचलि
एबे लेहु नामो रघुबरि

सुलोचना सति हेल
गीत मर सिराए गेल

जाहा जाहा भुलो हेतेइक मर
दया करि बनाऐक तर

जेसन जनलं बनाउअलं
नर नारीक बिनति लेलं

सभे मिलि दया करा मर उपर
छटे बड़े सभे के गड़े धर

दया करि बनाए लेक तहर

गंधर्व महतो

डेलङ (लखीपुर)

गंधर्व महतो कुड़मालि भाषा के भक्त कवियों में से एक हैं। बुण्डू, रांची के सुटीलौंग गांव में आपका जन्म एक संभ्रांत महतो परिवार में संभवतः 1887 ई. में हुआ था। बाद में आप डेलङ (लखीपुर) जा कर बस गये। कुड़मालि भाषा-साहित्य की सगुण भक्तिधारा को जिन कुड़मालि कवियों ने अपनी रचनाओं से समृद्ध किया है उनमें आपका नाम प्रमुख है, लेकिन आपकी अधिकांश रचनाएँ अब अप्राप्य हैं। आपकी मृत्यु 1985 ई. में 98 वर्ष की उम्र में हुई।

प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन
चेशायर होम रोड, बरियातु, राँची-834009 झारखण्ड